

श्रीमती प्रतिभा देविसिंह पाटिल, महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार का भाषण *

भारतीय रिज़र्व बैंक के प्लेटिनम जुबली के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में शामिल होकर संस्मारक स्टैम्प जारी करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। इसके गवर्नर, निदेशकों और स्टाफ को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

भारतीय रिज़र्व बैंक देश की आर्थिक यात्रा का एक भाग रहा है। यह भारत की वित्तीय प्रणाली का केंद्र रहा है। चलनिधि उपलब्ध कराने के लिए ब्याज और विनिमय दरों की स्थिरता सुनिश्चित करने; वित्तीय संस्थाओं और बाजारों को विकसित करने के लिए जमाकर्ताओं की निधि की सुरक्षा और बैंकों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अर्थव्यवस्था में रिज़र्व बैंक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यह 75 वर्षों से अस्तित्व में है और इसने गंभीर तथा तुलनात्मक रूप से सामान्य समय के दौरान देश की अर्थव्यवस्था को सहारा देने में उच्च रूप से दायित्वपूर्ण तरीके से अपना योगदान दिया है। यह वह संस्था है जिसे गवर्नर के रूप में प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री प्राप्त होने का सौभाग्य मिला है। स्वयं प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह 1982 से 1985 तक रिज़र्व बैंक के गवर्नर थे।

1930 के दशक की महा मंदी के बाद 1935 में स्थापित रिज़र्व बैंक अपना प्लेटिनम जुबली वर्ष एक अन्य वैश्विक बदलाव के समय मना रहा है। आर्थिक वृद्धि की निम्न दर और बेरोजगारी की ऊंची दर के संदर्भ में पिछले दो वर्षों के दौरान के ऋण और वित्तीय संकट के प्रभाव की तुलना महा मंदी से की जा सकती है। हाल के संकट सहित रिज़र्व बैंक के निष्पादन ने दर्शाया कि राष्ट्र के मौद्रिक प्रवाह को विनियमित करने के इसके अनुभव से इसकी क्षमता बढ़ी है और जटिल आर्थिक मामलों को निपटाने की इसकी परिपक्वता और दृष्टिकोण गहरा हुआ है।

भारत आर्थिक तूफान का सामना करने में सक्षम था। भारत सरकार ने प्रेरक पैकेज की घोषणा की जबकि

* भारतीय रिज़र्व बैंक के प्लेटिनम जुबली के उपलक्ष्य में नई दिल्ली में 16 जनवरी 2010 को आयोजित समारोह और डाक टिकट जारी करने के कार्यक्रम में श्रीमती प्रतिभा देविसिंह पाटिल, महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा दिया गया भाषण।

प्लेटिनम जुबली समारोह

श्रीमती प्रतिभा देविसिंह पाटिल,
महामहिम राष्ट्रपति,
भारत सरकार का भाषण

रिज़र्व बैंक ने प्रणाली के विनियमन के लिए कदम उठाए। राजकोषीय नीति में देशी मांग में गिरावट को रोकने के लिए उपाय किए गए और इसकी समीक्षा की गई जबकि मौद्रिक नीति का उपयोग वृद्धि की गति बढ़ाने के लिए किया गया। भारिबैं और हमारे सुविनियमित बैंकिंग क्षेत्र द्वारा अपनाई गई सावधानीपूर्वक बनाई गई विवेकपूर्ण नीतियों की वित्तीय विशेषज्ञों ने प्रशंसा की। हमारी वृद्धि दर में प्रारंभिक रूप से गिरावट आने के बावजूद अब हम वापस 7 प्रतिशत की वृद्धि दर के करीब लौट आए हैं और इससे हमारी नीति सही होने पर मुहर भी लग गई है। आगामी समय में हमारी वृद्धि दर में और बढ़ने की आशा है।

यदि इस संकट से कोई सबक लिया जा सकता है तो वह यह है कि ऋण का अनियंत्रित वितरण नहीं हो सकता। रिज़र्व बैंक ने यह लगातार सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंकों के पास जोखिम प्रबंधन के उचित दिशानिर्देश होने चाहिए। अनियंत्रित रूप से ऋण वितरण से बचने के साथ इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि ऋण-नीतियों में उत्पादक उद्यमों के लिए ऋण देने को अवश्य ही शामिल करना होगा। देश में विकास और बुनियादी सुविधाओं की परियोजनाओं में तेजी लाने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि बैंक ऋण सभी क्षेत्रों, वर्गों और सभी स्तर की इकाइयों के लिए उपलब्ध हो।

भारत उच्च बचत दर, व्यापक देशी बाजार और जनसांख्यिकी जैसे अनूठे अनुकूल लाभ की स्थिति में है और ये लाभ मांग में निरंतरता बनाए रखने के लिए पोषक हैं। फिर भी, वर्तमान स्थिति के अनुसार अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था सहित विभिन्न आर्थिक संकेतकों पर सूक्ष्म निगाह रखने की आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में एक और घटना हुई है - इस बात को मान्यता मिल गई है कि वैश्विक रूप से समन्वित

अर्थव्यवस्था की गतिशीलता के लिए भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं का शामिल होना जरूरी है। इससे रिज़र्व बैंक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। अंतर-संबंधित विश्व में, हमारे केंद्रीय बैंक को नीतियां और कार्यक्रम बनाते समय वैश्विक घटनाओं को ध्यान में रखना होगा। किंतु, ऐसा करते समय, हर समय भारतीय संदर्भ को ध्यान में रखना होगा, ऐसी घटनाओं का हमारे जीवन से संबंध देखना होगा और हमारे देश के लोगों की उभरती आवश्यकताओं को ध्यान में रखना होगा।

भारत में, प्रमुख लक्ष्यों में से एक वित्तीय समावेशन है। बैंकिंग प्रणाली की प्राथमिकता स्वयं को मजबूत करने की होनी चाहिए ताकि वह आधुनिक, गतिशील और समावेशक अर्थव्यवस्था को सहारा दे सके। देश में बैंकिंग प्रणाली का काफी विकास हुआ है किंतु अब भी बैंक रहित क्षेत्रों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, पहुंचने की चुनौती सामने है। मुझे विश्वास है कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए रिज़र्व बैंक उचित नीति और रूपरेखा बनाएगा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए।

रिज़र्व बैंक हमारी विकास-कार्यसूची की जरूरतों और प्राथमिकताओं के प्रतिसाद में बैंकिंग प्रणाली को दुरुस्त करता आ रहा है। इस चरण में, उनके बढ़े हुए सामाजिक दायित्व के एक भाग के रूप में हमें निरंतर चल रहे राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों में बैंकिंग प्रणाली की अधिक सहबद्धता की आवश्यकता है। अनेक सरकारी योजनाएं लागू की जा रही हैं जिनमें राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना से लेकर विधवा-पेंशन तक; कुशलता विकास से लेकर स्व-सहायता समूहों तक की योजनाएं शामिल हैं। रिज़र्व बैंक द्वारा मार्गदर्शित बैंकिंग प्रणाली ने यह बात देखनी चाहिए कि उनके सहभाग से इन कार्यक्रमों का कार्यान्वयन किस प्रकार अधिक प्रभावी हो सकता है।

स्व-सहायता समूहों को आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, विशेष रूप से महिलाएं और बीपीएल से नीचे की श्रेणी के लोगों के सशक्तीकरण के प्रभावी साधन के रूप में मान्यता मिल गई है। बैंकों के लिए यह अपेक्षित है कि वे निवल बैंकिंग ऋण का 40 प्रतिशत भाग कृषि, लघु उद्यम और दुर्बल वर्गों जैसे प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अग्रिमों के रूप में मूल उधार दर से कम दर पर दें। स्व-सहायता समूहों को दिए गए अग्रिम मुख्यतः कृषि क्षेत्र और दुर्बल वर्गों संबंधी होते हैं और उनमें महिला एसएचजी लाभार्थियों की संख्या पर्याप्त नहीं होती। अतः, स्व-सहायता समूहों के अग्रिमों को स्पष्ट रूप से लघु उद्यम अग्रिम श्रेणी और डीआरआइ योजनाओं के बीच स्पष्ट रूप से दिखाना चाहिए ताकि उन्हें कम ब्याज दर पर ऋण मिल सके। भारिबैं ने एक ऐसी पद्धति विकसित करने पर विचार करना चाहिए जिससे महिला एसएचजी

और विशेष रूप से बीपीएल से नीचे की श्रेणियों को 4 प्रतिशत वार्षिक से अनधिक की ब्याज दर पर ऋण मिल सके और आगे दिए जाने वाले ऋण पर भी उच्चतम सीमा होनी चाहिए।

समापन के रूप में, मैं यह कहना चाहूंगी कि रिज़र्व बैंक न सिर्फ खुद को बदलती अपेक्षानुसार ढाल लिया है बल्कि वह ऐसी नई नीतियां बनाकर उन्हें लागू कर पाया है जिनसे देश उच्च वृद्धि पथ पर पहुंच पाया है। आगामी दशक में बैंकिंग क्षेत्र के सामने और अधिक चुनौतियां और जरूरतें आएंगी। मुझे विश्वास है कि इन चुनौतियां का विश्वास के साथ सामना किया जाएगा। मैं एक बार फिर रिज़र्व बैंक और उससे संबंधित सभी लोगों को इस सफल स्थिति तक पहुंचने के लिए बधाई देती हूँ और भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।